"सनातन संस्कृति पुनरुत्थान" आयोजन

भगवान लकुलीशजी के शिव संकल्प "विश्व में सनातन संस्कृति पुनरुत्थान" कार्य को साकार करने पूज्य प्रितम मुनिजी ने वर्ष 2010 में "लकुलीश सनातन संस्कृति प्रबोधन अभियान" संस्था की स्थापना कर भारत देश के गुजरात राज्य के वडोदरा ज़िला अंतर्गत सिद्धक्षेत्र कायावरोहण में "लकुलीशधाम" नाम से मुख्यालय की स्थापना की। "भगवान लकुलीशजी" के आदेश अनुसार वैदिक और दार्शनिक मूल्यों के आधार पर विश्व में नैतिकता, सात्विकता और आध्यात्मिकता के प्रसार द्वारा शांति, नीति और एकता स्थापित करने एवं परमार्थ कार्यो द्वारा सर्वकल्याण हेतु पूज्य प्रितम मुनिजी ने निवृत्ति पक्ष (साधु) और प्रवृत्ति पक्ष के संकल्पबद्ध शिष्यों की चार मंडलीयों की रचना कर चार दिशाओं में सनातन संस्कृति पुनरुत्थान कार्य करने एवं विश्व में अनेक योगाश्रमों, गुरुकुलों, गौ शालाओं, तपोवनों, चिकित्सालयों, जीवसेवा संस्थानों की स्थापना द्वारा सनातन संस्कृति, योगविद्या, यज्ञविद्या का शिक्षण-प्रशिक्षण और सेवाकार्यो करने हेतु 1100 वर्ष (2013 - 3113) का उत्तम कार्य आयोजन किया। पूज्य प्रितम मुनिजी ने मुमुक्षुजनों को पंचकर्म (1) योग (2) यज्ञ (3) त्रिकाल संध्या (4) देव पूजन (5) सोलह संस्कार का प्रशिक्षण देना और पंच उपदेश (1) सनातन धर्म (2) कर्म का सिद्धांत (3) कर्म - ज्ञान - भक्ति (4) चार आश्रम (5) चार पुरुषार्थ का यथाशक्य मार्गदर्शन देने एवं सनातन धर्म के शास्त्रो वेद, उपवेद, उपनिषद, दर्शन, ब्राह्मण, आरण्यक, संहिता, भगवद्गीता, स्मृति ग्रंथ, सूत्रग्रंथ, पुराण, उप पुराण, आगम, तंत्र, इतिहास तथा अन्य ग्रंथ के ज्ञान विज्ञान की प्राथमिक जानकारी देने का आयोजन किया। जिसके अंतर्गत • बाल संस्कृति प्रबोधक (उम्र 14 वर्ष तक) • युवा संस्कृति प्रबोधक (उम्र 15 से 45 वर्ष) और • वरिष्ठ संस्कृति प्रबोधक (उम्र 45 वर्ष से ज्यादा) को सनातन संस्कृति का शिक्षण प्रशिक्षण देकर विश्व में शिव संकल्प "सनातन संस्कृति प्रसार" में जोड़ने का आयोजन किया। सनातन संस्कृति पुनरुत्थान को साकार करने पूज्य प्रितम मुनिजी ने अनेक कार्य आयोजनों किये (1) लकुलीश योगाश्रम (2) लकुलीश तपोवन (3) लकुलीश सनातन संस्कृति कार्यालय (4) लकुलीश गौशाला (5) हिंदु गुरुकुल - लकुलीश सनातन संस्कृति विद्यापीठ (6) लकुलीश सेवासंघ (7) लकुलीश उपचार संस्थान (8) लकुलीश उद्योग और यांत्रकी प्रशिक्षण संस्थान (9) लकुलीश वनीकरण जीवसेवा संस्थान (10) लकुलीश प्राकृतिक स्त्रोत पुनर्भरण

पूज्य प्रितम मुनिजी कहते है, "धर्मविद्या, अध्यात्मविद्या केवल बातें, कथावार्ता या कर्मकांड का विषय नहीं अपितु आचरण में लाने और धारण करने की विद्या है। पहलवानी की किताब पढ़कर पहलवान बनने के बारे में प्रवचन करने से या पहलवान के प्रवचन सुनने मात्र से कोई पहलवान नहीं बनता परंतु उचित खान-पान के साथ अभ्यास करने से पहलवान बन सकते हैं। वैसे ही अध्यात्मविद्या के प्रवचन सुनने से या किताबें पढ़ने से समझदार बन सकते है किंतु अध्यात्मविद्या को अपने में स्वानुभूति से धारण करने के लिए योग साधना करनी पडती है। योगविद्या अध्यात्म विज्ञान की प्रयोगात्मक सनातन विद्या है जो जीव को शिव रुप बनाती है, जीव को जन्म मृत्यु के बन्धन से मुक्त कर त्रिकालज्ञ, अजर-अमर, दिव्य शरीरी बनाने वाली विद्या है।"

आओ ! हम सब सनातन संस्कृति के मूल्यों को जीवन में धारण और प्रसार कर विश्व में नैतिकता, सात्विकता, आध्यात्मिकता के प्रसार द्वारा शांति, नीति, एकता स्थापित करने में अपना उत्तम योगदान दें।